श्री कुंथुनाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छन्द)

कुंथुनाथ जिनराज दया के सिंधु हैं।
नाथ दिवाकर आप सुधाकर इंदु हैं।।
प्राणीमात्र की रक्षा करते नाथ हैं।
इसीलिए शत इंद्र झुकाते माथ हैं।।1।।
सिद्धालय में जिनवर आप समा गये।
निज देहालय में परमेश्वर आ गये।।
प्रभो आपका भक्ति से आह्वान करूँ।
आकर फिर ना जाना ये ही अरज करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

प्रासुक जल अर्पण करने से, शुद्ध बनेंगे सोचा था।
किंतु अशुभ भावों को हमने, नहीं मिटाना चाहा था।।
जनम मरण से व्याकुल होकर, वचनामृत पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, प्रासुक जल पूजन लाये।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाषनाय जलं...।

कभी अतीत के विकल्प करते, कभी नआगत के संकल्प।
भव आताप बढ़ाते रहते, बीत गया यों काल अनंत।।
सिद्धक्षेत्र की शांति पाने, भवाताप हरने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, श्रद्धा चंदन ले आये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाषनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत उपाधि पाने हेतु, आधि व्याधि से ग्रसित रहे।
कुगुरु कुदेव कुधर्म की सेवा, मिथ्यादर्शन गृहीत धरें।।
इसीलिए अविनाशी बनने, निज वैभव पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, अखंड अक्षत ले आये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्..... ।

इंद्रिय मन के विषय मनोहर, मिष्ट जहर जैसे लगते।
आत्म शील के नाशक हैं सब, दुख उत्पन्न सदा करते।।
चिन्मय रूप मनोहर पाने, आप्त काम होने आये।
कुंथुनाथ जिनशरण में, पुष्प अचेतन ले आये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन के कारण किञ्चित् किंतु, मन के हित आहार किया।
तन की भूख तनिक से मिटती, क्षुधा व्याधि को बढ़ा दिया।।
क्षुधा रोग उपसर्ग मिटा दो, ज्ञान सुधा पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, ले नैवेद्य चले आये।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाषनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य रोशनी से बाहर में, सारा तमस मिटा डाला।
चेतन गृह में मोह बढ़ाकर, मिथ्यातम से भर डाला।।

महाबली नृप मोह कर्म का, सर्वनाश करने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, मणिमय दीपक ले आये।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाषाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप दशांगी चढ़ा चढ़ाकर, धूम्र उड़ाई नभ तल में।
कर्म शक्ति को बढ़ा बढ़ाकर, भटक रहे है भव-वन में।।
तप अग्नि में कर्म काठ को नाथ जलाने हैं आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, धूप सुगंधी ले आये।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्तापन से कार्य जगत में, किये बहुत दुख पाया है।
फल पाने की इच्छा ने ही, आतम को तड़पाया है।।
जग के फल दुखदायी तजकर, शिवफल पाने हैं आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, शुद्ध मनोहर फल लाये।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पर द्रव्यों का भोग अभी तक, किया बहुत मैंने स्वामी।
पर पद की अभिलाषा में ही, जीवन व्यर्थ किया स्वामी।।
जड़ वैभव को चढ़ा आज, चैतन्य विभव पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, अर्घ्य बनाकर ले आये।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(आडिल्ल छंद)

श्रीमती को सोलह सपने दिखलाये।
श्रावण वदी दशमी को गर्भ में आये।।
तीनों पद के धारी प्रभुवर धन्य हैं।
नगर हस्तिनापुर भी लगता रम्य है।।1।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूर्यसेन राजा के घर में जन्म लिया।
एकम सुदी वैशाख दिवस पावन किया।।
कामदेव तेरहवें रूप मनहारी।
पांडु शिला अभिषेक हुआ अतिशयकारी।।2।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाति स्मरण से प्रभु आप संयम धरा।
सब संसार असार जाना तप निखरा।।
विजय पालकि चढ़े चले निर्जन वन में।
तिलक तरु के नीचे प्रभुवर तप करने।।3।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैत्र शुक्ला तृतीया घाति नष्ट किया।
तृतीया घाति नष्ट किया।
समवसरण को रच कुबेर हर्षित हुआ।
शिवपथ बतलाया प्रभो ने ज्ञान दिया।
दिव्यध्वनि से प्रभु विश्व कल्याण किया।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ध्यानाग्नि से अष्ट कर्म को दग्ध किया।
एकम सुदी वैशाख मुक्ति वरण किया।।

श्री सम्मेदाचल से जिनवर सिद्ध हुए।
कूट ज्ञानधर गिरिवर की जय बोल रहे।।5।।
ऊँ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

कुंथुनाथ भगवान है, करुणा के अवतार।
इस असार संसर में प्रभु भक्ती ही सार।।1।।

(पद्धरि छंद)

जय कुंथुनाथ हे जगन्नाथ, करुणा के सागर प्राणिनाथ।
जय कुमति निकंदन कुंथुनाथ, हे कल्मषी भंजन कुंथुनाथ।।2।।
जय सुख वारिधि हे कुंथुनाथ, गुणवंत हितंकर कुंथुनाथ।
जय शिवरमणी के प्राणनाथ, छठवें चक्रेश्वर कुंथुनाथ।।3।।
जय श्रीमति नंदन कुंथुनाथ, पितु सूर्यसेन सुत कुंथुनाथ।
पैंतिस गणधर थे आप नाथ, थे मुख्य स्वयंभू मुनीनाथ।।4।।
हैं कई हजार शिष्यों के नाथ, श्रोता नर नारी इंद्रनाथ।
अष्टादश दोष विमुक्त नाथ, प्रभु नंत चतुष्टय युक्त नाथ।।5।।
मोहारिजयी श्रीकुंथुनाथ, शत इंद्र नमाते शीश नाथ।
चिन्मय चिंतामणि आप नाथ, कुन्थादि जीव के दया नाथ।।6।।
जब कौरव वंशी कुंथुनाथ, अज चिह्न चरण है आप नाथ।
मैं तब चरणों में नमूँ माथ, मुक्ति तक देना साथ नाथ।।7।।
प्रभु मोक्षनगर में करें वास, जिनपदवी की बस लगी आस।
जिनराज दर्श की अभिलाष, वसु कर्म दुष्ट का करूँ नाश।।8।।
अब हो जाऊँ स्वाधीन नाथ, इसलिए नवाऊँ आज माथ।
प्रभु सादर सविनय नमन आज, जयमाला अर्पण मुक्ति काज।।9।।

दोहा

नंत चतुष्टय लीन है, चित् स्वभाव अविकार।
मुझ पर भी कर दो कृपा, करूँ भवोदधि पार।।10।।
ऊँ ह्री श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री कुंथु जिनेश्वर, हे करुणेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ऊयान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।।इत्याशीर्वादः।।